कैथरीना

निराश हो जाने के बाद एक मन के सामने मात्र दो विकल्प होते हैःया तो वो टूटता है या फिर बज्र की तरह कड़ा हो जाता है. पर अपनी इन दोनो अवस्थाओं मे वो अपरिवर्त्तित ही रहता है।
अचानक उससे मेरी मुलाकात हार्ल्स मे हुई. पर हमेशा की तरह इस बार मुझे देखकर उसने अनदेखा न किया. वरन सड़क के परली तरफ जमीन पर अपने बेंत की डोलची रखकर एक तरह से मेरे समीप आने का इन्तज़ार करने लग पड़ी।सड़क पर गाड़ियों के आने जाने का सिलसिला खत्म होने को ही न आ रहा था।मै ज्यों ही एक कदम सड़क पर रखता था.पूरे रफ्तार से कोई गाड़ी आती दिखती थी.मै फिर से फूटपाथ पर आ जाता था।उसके साथ एक बूढी औरत भी थी।उसने मुझे कभी भी न बताया था कि उसका कोई रिश्तेदार हार्ल्स मे भी है।ऐसे भी मै उससे बहुत कुछ न पूछ पाया था और न अपने बारे मे बता पाया था।उसने अपने को अन्जान बना लिया।बर्लिन मे वो मुझे आगामी चार वर्षो मे कई बार दिखी. पर अक्सर दूर से।एकाध बार उससे मेरा आमना सामना भी हुआ. पर या तो उसने अपनी नजरें मोड़ लीं या झुका लीं।मैने भी हलो हाय कहके उसे किसी ऊहापोह मे न डाला।जिस जेनरल स्टोर मे वो काम करती थी. उसमे तो मैने जाना ही बन्द कर दिया।
गाड़ियों के आने जाने का सिलसिला खत्म होने का नाम ही न ले रहा था।उसी ने मुझे इशारे से बताया कि थोड़ा आगे जाने पर एक ऑम्पल है. वहीं मिलते है।मै आगे बढा।
हालॉकि जर्मनी मे अप्रील के महीने मे मौसम ठीकठाक हो जाता है. पर पता नहीं क्यों! इस वर्ष का अप्रील कुछ अजीब सा ही था।करीब करीब रोज ही या तो बरसातें होती रहीं या ओले गिरते रहे या फिर वर्फबारी होती रही।जब तब थोड़े देर के लिए मौसम साफ हो जाता था. जिसका मै ही नही पूरा हार्ल्स इन्तजार करता रहता था।लोग बाग भरभराकर अपने घरों से खरीददारियों के लिए निकल पड़ते थे।
ऑम्पल पर खड़ा मै उसके हरे होने का इन्तज़ार कर रहा था।सिर्फ एक बार मैने अपनी नजरें उठाई।कैथरीना के कमर तक लहराते बाल अब उसके पास नही थे. पर उससे उसकी सुन्दरता मे कोई खास फर्क नही आया था।
ऑम्पल के हरे होते ही मै सड़क के दूसरी ओर बढा।अमूमन हॉथ मिलाने के बाद हम एक दूसरे से गले लग के मिलते थे. पर पता नहीं किस सन्कोचवश इस बार मै ऐसा कुछ न करना चाहा।वो हल्के से मुस्कराई और खुद ही अपनी बॉहे फैला दी।
परिचय के बाद मुझे पता चला कि वो बूढी औरत उसकी दादी हैं. जो हेर्सवेर्ग मे रहती हैं।लाख मना करने के बावजूद मैने उसकी डोलची ले ली. जो खाने पीने के सामानों से भरी थी।थोड़ी ही दूरी पर एक काले रंग की फिएट खड़ी थी।पहले उसने गाड़ी का एक दरवाजा खोल कर अपनी दादी को अन्दर बैठने को कहा फिर डिक्की खोली।मै उसकी डोलची वहॉ रख कर एक तरह से चलने ही वाला था कि अनायास उसने पूछाःतुम हार्ल्स मे ठहरे कहॉ हो!
ःकिर्शबेर्ग के एक यूथ हॉस्टल मे।
ःहार्ल्स मे कितने दिन रहोगे!
ःपता नही।कोई प्लान बनाके नहीं आया हूॅ।
ःकैसे हो!
ःमै तो ठीक ही हूॅ।तुम कैसी हो!तुम्हारे माता पिता. क्रिस्टिना और कीम का क्या हालचाल है!
पता नही क्यों झटके से वो गाड़ी की डिक्की बन्द करके अपने झोले मे कुछ ढूॅढने लग पड़ी।मै फिर भी उसके कॉपते होंठों को देख सकता था।अपनी ऑखों पर एक पावर का रंगीन चश्मा चढाकर वो अपने जूते की टो से वर्फ के एक थक्के को तोड़ कर सड़क पर फैलाती जा रही थी।
ःतुम हार्ल्स मे अपनी छुट्टियॉ मनाने आई हो!
विना अपनी नजर उठाए उसने मुझसे पूछाःतुम कल शाम को अपने हॉस्टल मे हो!ये मेरे सवाल का जवाब नही था. फिर भी मुझे उसके सवाल का जवाब देना पड़ा
ःपता नही।ये सब कुछ यहॉ के मौसम पर निर्भर करता है।
ःकल शाम को छ बजे के आसपास मै तुमसे मिलना चाहती हूॅ।बस ना नहीं करना।
ःअगर तुम आओगी तो मै घर पर ही रहूॅगा. कहके मैने अपना दाहिना हॉथ आगे बढाया।उसे परे करके वो मुझे मजबूती से भींच ली।
जब भी मै उसे अपने से अलग करने का हल्का सा भी प्रयास करता था. उतनी ही मजबूती से वो मुझे भींच लेती थी।
जिस आलिंगन की कल्पना मात्र कभीं मुझे पोर पोर तक सिहरा देने का सार्मथ्य रखती थी. आज वो मुझे अशक्त ही नही. बल्कि उबाऊ भी लग रही थी।एक बार किसी को अपने हृदय से निकाल देने के बाद एक साथ उसकी तमाम बातें या चीजें न जाने क्यों तत्काल बेमानी हो जाती हैं।
मुझे ऐसा लग रहा था. जैसे मुझसे कैथरीना नही. बल्कि मांस का लोथड़ा एक जोंक की तरह चिपका हुआ है।
जब उसने मुझे अपने से परे किया. तब मेरी सॉसे वापस लौटीं।
यकायक मेरी नज़र आकाश की ओर उठी।वहॉ एक इन्द्रधनुष उग आया था. जिसके सातो रंगो मे मुझे असंख्य रंग दिख रहे थे।अहंकार और पराजय का भी एक रंग होता है।आशा और निराशा. सम्मान और अपमान. क्षोभ और खुशी का भी एक अपना रंग होता है।
ःठीक है. तो फिर मै चलती हूॅ।बाकी बातें कल मिलने पर होंगी।
मै वापस अपने हॉस्टल की ओर बढ चला. कैथरीना की गाड़ी अभी भी वहीं खड़ी थी।
वो अपने बैक मिरर मे शायद मेरे ओझल हो जाने का इन्तजार कर रही थी।
उसके कॉपते ओंठ मुझे जबर्दस्ती फिर एक बार एक ऊॅची दीवार की छलांग लगवा कर अतीत की भूमि पर ले जा पटके थे!
एक अनहोनी आशंका मुझे सिहरा गई थी।आखिर ये कल मुझसे क्यों मिलना चाहती है!इसे मुझसे कौन सी बातें करनी है!
नारियों के मामले मै हमेशा अपने भगवान की ओर खिसका देता हूॅःवो ही उनके मन को जानते और समझते हैं।
कैथरीना से मेरी बस चन्द मुलाकाते हैंःजो भी मै उसके बारे मे जान पाया. उसके आधार पर मै बस इतना ही कह सकता हूॅ कि इस मेनका पर किसी दुर्वासा श्रृषि का श्राप था. जिससे मुक्त होने के लिए एक बार मुझसे भी मदद मॉगी गई थी।मुझे इन्कार करना पड गया था. जिसकी सिर्फ एक वजह थीः
हर एक सम्बन्ध समय के साथ कभीं भी एक नए मोड़ के लिए सक्षम है।इस सम्भावना के बारे मे मेरे मन मे कभीं कोई द्विविधा न थी. बस उसकी जमीन दलदली नही होनी चाहिए।ऐसी जमीनो पर किसी भी सम्बन्ध का महल बनाना तो दूर रहा. उसकी एक झुग्गी तक नही खड़ी की जा सकती।
बर्लिन मे कैथरीना अपने माता पिता के संग रहती थी. जो मेरे पड़ोसी थे।जब मै अपने नये मकान मे आया तो एक एक पड़ोसी से व्यक्तिगत जा कर मिला और अपना परिचय दिया।दरवाजा कैथरीना ने ही खोला था।गाढे नीले रंग के जीन्स और सफेद ब्लाउज पहने।उसने अपना दरवाजा पूरा नही खोला

था।जंजीर से अॅटका रखा था।कमर तक खुले बालों वाली ये कैथरीना कई दिनो तक मेरे दिमाग मे छाई रही।बाद के दिनो मे मै उसके माता पिता से भी मिला।अक्सर मुझे सोचना पड़ जाता था कि इस आम नक्श के मॉ बाप को ये मेनका कैसे मिल सकी!

आए दिन वो मुझे अपने रसोईघर की खिड़की से होफ मे आते जाते दिखती थी।वो अपने बालों को खुला ही रखती थी।

मौसम अभीं भी साफ था।यहॉ तक कि यहॉ वहॉ धूप तक चिटक चला था।अपने कमरे मे सारा सामान पटक कर मै यूॅ ही बाहर घूमने निकल पड़ा।पहाड़ों पहाड़ियों और उनकी श्रृंखलाओं से घिरे हार्त्स के सारे शहर और कस्बे समुद्री तल से तीन सौ मीटर से लेकर डेढ हजार मीटर की ऊॅचाइयों पर बसे हैं।बर्च ओक् क्रस्तानियन जंगली सेवों और चीड़ के पेंड़ों से आच्छादित पहाड़ों की चोटियॉ कुहासों से अभी भी ढॅकी पड़ी थीं।रह रह कर बादल के छोटे छोटे टुकड़े इन्ही पहाड़ों के किसी एक हिस्से से उठते थे फिर किसी दूसरे हिस्से मे खो जाते थे।सड़क के दोनो ओर दूर दूर तक बस गहरी खाड़ियॉ ही नजर आती थीं।सड़कों पर एक अजीब सी शान्ति व्याप्त थी.जो रह रह कर बस पूरी रफ्तार से आती जाती गाड़ियॉ ही तोड़ती थी।अगल बगल के सारे मकान एक ही शैली के थे.जिनमे न तो किसी तरह का शोर था और न कोलाहल।कई मकान खाली भी पड़े थे।

शहर की आबादी छोड़ कर मै एक जन्गल की तरफ बढ गया।अभीं मै एक पगडन्डी पर आया ही था कि अचानक बड़ी जोरों से एक बर्फीली ऑधी आई।ऑखें खोलना तक दूभर हो गया था।एक कदम आगे बढाना भी दुष्कर था।मै एक पेंड़ के तने से अपने को छुपा कर अपने जैकेट के कॉलर खड़े कर लिए।तकरीबन आधे घन्टे तक अपनी ऑखें बन्द किए मै इस भीषण ऑधी के थपेड़े खाता रहा और बर्फ मे नहाता रहा।जब ऑधी बन्द हुई तो मै घर ही वापस लौटना चाहा। तभी मेरी नज़र एक छोटे से खुले मैदान पर पड़ी.जिसके बीचोबीच पन्द्रह बीस कम उम्र के लड़के और लड़कियॉ सूखी लकड़ियो का ढेर लगाए जा रहे थे।मै उनकी ओर बढ चला।

एक मोटे पेंड़ की मोटी मोटी जड़ों पर उनके रूक्जाक्स बेतरतीब ढंग से पड़े हुए थे।वहीं एक लड़के से मुझे पता चला कि वो इस्टर की आग के लिए लकड़ियॉ जमा कर रहे हैं.जिनमे दूसरे दिन यानि रविवार को ठीक शाम के आठ बजे आग दी जाएगी।आज की पूरी रात वो यहीं बिताएगे.ताकि कोई समय से पहले इनमे आग न दे दे।मना करने के बावजूद एक लड़की अपना रूक्जाक उठा लाई और मुझे अपने थर्मस से एक ग्लास मे दो घूॅट कॉफी ढाल कर मेरी ओर बढा दी।न सिर्फ वो.बल्कि सभी मुस्कराए जा रहे थे।अब मुझे उनसे पूछना पड़ाःये कॉफी ही है न!इसमे तुमलोग नशे वशे की गोली तो नही घोले हुए हो!

एक ही साथ सभी बोल पडेःबकवास।

कॉफी की पहली घूॅट ही मेरा सीना चीरते नीचे उतरी।ये कॉफी न थी.बल्कि ठीक ठाक प्रतिशत वाली कोर्न थी।अब मुझे भी मुस्कराना पड़ा।

दूसरे दिन वहॉ आने का वायदा करके मै वहॉ से चल पड़ा।इस बार आम रास्ता न लेकर मैने पगडन्डियॉ ही पकड़ी और गिरता लुढकता सरकता अपने हॉस्टल वापस चला आया।

यहॉ मेरे अलावे कोई भी न ठहरा था।इस दोमंजिले हॉस्टल मे कुल छोटे बड़े अट्ठारह कमरे थे।मेरा कमरा कुछ खास बड़ा न था.पर इससे लगी एक बालकोनी थी।

कमरे के सामने दॉई ओर थोड़ा हटके हॉस्टल के टवायलेटस और बाथरूम्स थे।रसोई नीचली मंजिल पर थी।

मै बालकोनी मे आकर खड़ा हो गया।हल्का सा धुन्ध बिखरने को आया था.फिर भी मै अच्छी तरह देख सकता था कि किस तरह पहाड़ों की चोटियों से छोटे छोटे बादलों के टुकड़े खेल रहे थे।रह रह कर वो अपनी आकृतियॉ बदल रहे थे।जब तब वो परस्पर मिलते थे.फिर एक नई आकृति बनाते थे.फिर खो जाते थे।इर्द गिर्द एक धूप्प सन्नाटा छाया हुआ था।मेरे मन का एकाकीपन बाहर के धुन्ध की नाई घहराता जा रहा था।कैथरीना की याद प्रखर होती जा रही थी।मै उसे अब पाना तो नही चाहता था.पर कभी उसको पाने की आस मेरे मन मे मेरे अहंकार और पराजय के बावजूद एक मधुर याद की तरह अंकित थी।मै अपने कमरे मे वापस लौट आया।अनायास मुझे वो शाम याद आईः

बर्लिन मे रात के दस बज चले थे।मै बिस्तर मे जा चुका था कि अचानक दरवाजे की घन्टी बजी और मुझे उठना पड़ा था।इतनी गई रात को किसे मेरी याद आ गई.यही सोचता मै दरवाजे की ओर बढा।की होल से बाहर देखा.दरवाजे पर कैथरीना एक जमनी रंग का नाईट गाऊन पहने खड़ी थी।अमूमन नाईट गाऊन मे कम से कम शरीफ घरों की लड़कियॉ अपने मकानों से बाहर नही जातीं हैं।इसे क्या हो गया है!इतना अस्त व्यस्त मैने उसे कभीं पहले न देखा था।

ःमै तुम्हारे संग थोड़ी देर बैठ सकती हूॅ!

मै भी अब क्या कहता! बिटे! कहके उसे ड्राईन्ग रूम की तरफ इशारा कर दिया।दरवाजा बन्द करके मैने उससे पूछाःतुम्हारे माता पिता बर्लिन मे नहीं है क्या!

ःवो सोने जा चुके हैं।

ःतुम्हे कुछ पीना है!

उसने कुछ नही कहा.जाके एक सोफे पर बैठ गई।

मै पानी से भरे दो ग्लास लिए ड्राईन्ग रूम मे आया तो देखा.कैथरीना ऑसुओं मे नहाए बैठी थी और रोये जा रही थी।

मेरी समझ मे नही आ रहा था कि मै उसे किस तरह की शान्तवना दूॅ और कैसे दूॅ!मुझे इस बात का भी भान न था कि वो किस वजह से रोये चली जा रही है!

मै चुपचाप जा कर उसके बगल मे बैठ गया।चाह कर भी मै अपने प्रश्न को अपनी उदासीनता से बरी न कर पायाः

क्या बात है!कहीं से कोई बुरी खबर आई है!

सिसकते हुए उसने कहाःकीम ने मुझे छोड़ दिया है।

मन ही मन मैने कहाःऔर तुम उसके अफसोस मे मातम कर रही हो और वो भी मेरे ड्राईन्गरूम मे बैठे मेरे सामने।गुस्सा तो मुझे बहुत आया.पर उसे जली कटी सुनाने का फायदा भी क्या था!

मै कीम को तो नही जानता था.पर कई बार उसे दूर से देखा अवश्य था।पैदा तो वो उत्तरी कोरिया मे हुआ था.पर उसे बर्लिन के एक विवाहित दम्पति ने एडाप्ट कर लिया था.जब वो सिर्फ दो वर्ष का था।उसकी परवरिश वगैरह बर्लिन मे ही हुई थी।उसके पिता के पास सेकेन्ड हैन्ड गाड़ियों की एक गैरेज थी जो ठीकठाक चल रही थी।स्कूल के बाद कीम गाड़ियों के मरम्मत का काम सीख रहा था।आगे के दिनो मे उसे ही ये गैरेज चलाना था।कैथरीना के संग ही उसने स्कूल की पढाई खत्म की थी।रोज ही गई शाम को वो अलग अलग गाड़ियों मे कैथरीना के पास आता था और वो सज धज कर पता नही कहॉ उसके साथ चली जाती थी।उसे न तो दीन की फिक्र होती थी और न दुनिया की ही।

उन दिनो मै बिना एक पल सोचे कैथरीना को स्वीकार कर लेता.अगर एक बार भी वो मुझे एक हल्का सा संकेत दी होती.पर उसने ऐसा कुछ न किया

और उसे एप्रोच करना मेरे वश का न था।कीम मे वो कुछ ज्यादे ही व्यस्त हो गई थी।
जब मै कैथरीना को कीम के साथ देखता था, तो अक्सर ही एक मोनोलॉग मन ही मन दुहराता थाःकैथरीना वापस लौट आओ।अभी भी देर नही हुई है।मै बहुत लम्बा तुम्हारा इन्तजार नही कर सकता।ये खीची ऑखों वाले तबीयत से ही क्रूर होते हैं।इनका भावनाओं से दूर दराज तक कोई रिश्ता नही होता।वापस लौट आओ, वरना तुम एक दिन बहुत पछताओगी।
आए दिनो मुझे उसके माता पिता के शाम के खाने पर निमंत्रण मिलते थे।मुझे उनके यहॉ जाना पड़ता था।कैथरीना अपना प्लेट लिए मेरे सोफे के बगल मे फर्श पर ही बैठ जाती थी, चाहे वो जिस तरह के भी कपड़े मे क्यों न होती थी।उसकी एक और आदत मुझे बड़ी भाती थीःपता नहीं क्यों वो मेरी एक एक बात बड़ी तन्मयता से सुनती थी।उसे मेरे बातचीत के दौरान किसी तरह का व्यवधान बिल्कुल ही पसन्द न था।जब मै इनका मेहमान होता था, तब कीम वहॉ फटकता तक न था।मेरे सामने कीम का कोई जिक्र भी न होता था।
उसकी मॉ के लिए मेरे मन मे बड़ा आदर था।वो उक्राइना की रहने वाली थीं और रसियन तो उनकी मातृभाषा ही थी।रसियन मै भी बोल लेता था।हमारे बीच एक दूसरे को कहने सुनने के लिए बहुत कुछ था।मै नही समझता कि कीम को वो बहुत चाहती थीं, पर कैथरीना मे उनके प्राण बसते थे और अपनी बेटी की खुशी उनकी अपनी खुशी थी।इसके विपरीत उनके व्यवहारिक पति को एक बात का दिलासा था कि कीम आने वाले दिनो मे एक ठीकठाक चलते गैरेज का मालिक हो जाएगा और कैथरीना को एक राजकुमारी की तरह अपनाएगा और रखेगा।ये मेरा अपना व्यक्तिगत अनुमान था।
उनकी यही राजकुमारी मेरे सामने एक दयनीयता ओढे अश्रूप्लावित भिखारीन की तरह बैठी थी।शायद उसे उपयुक्त शब्द नही मिल रहे थे।वो बस मेरे ड्राईन्ग रूम मे लटके एक तश्वीर को निहारे जा रही थी और मै चुपचाप बैठा उसके ओंठो का थरथराना देखे जा रहा था।
समय के साथ कैथरीना मेरे लिए बेमानी हो गई थी और एक तरह से वो मेरे लिए अपने सारे अर्थ खो चली थी।जर्मनी मे रहते मुझे भी कई वर्ष हो चले थे ,लेकिन मै पूरी तरह से जर्मन नही बन पाया था।जिन्हे वो मेरी संकीर्णता कहते थे, उन्ही मे मै अपने मूल्य ढूँढता था।
कैथरीना के ऑसू सूखे तो न थे फिर भी उसी ने अपना मौन तोड़ाःये सामने वाली तश्वीर तुम्हारे मॉ की है!
ःनही।
ःफिर किसकी है!
ःकिसी एक भारतीय मॉ की है!
ःतुमने खीची है!
ःनही मदर टेरेसा ने खींची है।ड्रेस्डेन के एक चर्च मे मुझे ये तश्वीर एक कार्ड के रूप मे दिखी।मैने खरीद ली फिर उसका निगेटिव बनवा कर उसे इन्लार्ज करवा लिया।
ःवो औरत अपने बच्चे को गोद मे लिए क्या कर रही है!
ःअपने बच्चे को दूध पिला रही है और अपनी झुग्गी के आगे रोली से कोई चित्र बना रही है।
कैथरीना उठ कर तश्वीर को पास से निहारने लग पड़ी।मै उसके वाहियात सवालों से लगभग उब चुका था।कीम ने उसे छोड़ दिया है, सिर्फ ये बताने के लिए उसने मुझे गई रात को परेशान किया।
फिर उसने अपना रूख मेरी ओर किया और कहने लग पड़ीःहमारे देश मे प्यार के अक्षर समय के साथ इतने छोटे होते चले जा रहे हैं कि अब उन्हे पढा तक नही जा सकता।
मै बिना किसी प्रतिक्रिया के उसे सुनता रहा
ःकीम को मै पिछले ग्यारह वर्षो से जानती हूँ।पता नही उसने मुझमे कौन सी कमी देखी, मुझसे अपने सम्बन्ध तोड़ लिए।फोन पर भी नही आता।एक सहेली से मुझे पता चला कि उसने एक दूसरी लड़की ढूँढ ली है।फिर तीसरी ढूँढ लेगा और फिर ढूँढता ही रहेगा।
अब मुझसे भी न रहा गया और दया माया एक ओर खिसका कर मुझे उससे कहना ही पड़ गयाःतुम कीम पर ही सारे दोष क्यों मढे जा रही हो।अपने मे तुम कोई दोष नही देखती हो!हम सब अपने मन के मालिक है।सब अपनी किये जा रहे हैं।प्यार के अक्षर कौन छोटे करते जा रहा है!हम सभी।अब तुम इन प्रचलनों पर क्यों रो रही हो!एक कीम ही तो तुमने खोया है।सैकड़ों कीम बर्लिन मे है।हजारों डिस्कोस है।जहॉ जाना है जाओ, जैसी शाम तुम्हे बितानी है बिताओ।मेरे सामने क्यों मातम कर रही हो!
न चाहते हुए भी मेरी भाषा मे एक कड़वाहट आ गई थी।
ःमुझे नीद आ रही है।कल मुझे काम पर भी जाना है, ये कहके मै उठ खड़ा हुआ।
जलती ऑखों से मुझे घूरते हुए कैथरीना उठी और एक जोर झटके से मेरे मकान का दरवाजा बन्द करके चली गई।
मै मन ही मन गई रात तक बुदबुदाता रहाःमै इतनी दूर सिर्फ तुमलोगों का दुख दर्द ही सुनने नही आया हूँ।अपने दुख दर्द उन्हे जाके सुनाओ, जिन्हे अपनी स्वछंदताएँ ही चाहियें।पॉच बार विवाहित और पचपन बार अलगाव, ऐसे ही किसी तथाकथित दम्पति की तुम भी बेटी होवोगी।जाके उनके सामने रोओ या जाके किसी पादरी के सामने रोओ।उसके जीवन मे भी मै नही झॉकना चाहता।मै भी अच्छा आके फॅसा तुम जंगलियों के बीच।क्षितिज की कल्पना तुमलोग करते रहते हो, जहॉ न धरती उठने को तैयार है और न आसमान झुकने को।
घन्टों पता नही, मै क्या क्या बड़बड़ाता रहा।
मै एक ऐसे चरण से गुजर रहा था, जिसमे मेरी तमाम भौतिक उपलब्धियॉ एक दम से पंगु हो चली थीं।मुझे न सिर्फ अपना देश, बल्कि वहॉ की तमाम छोटी बड़ी घटनायें अक्सर ही याद आती थीं।इसके अलावे मुझे एक जीवनसंगीनि की भी तलाश थी, जो मुझे दूर दराज तक नजर नही आ रही थी।शायद कैथरीना मे मै वो सब कुछ ढूँढ लेता, जो मै ढूँढ रहा था।एक मौन प्रयास भी मैने किया पर वो सब कुछ जानते हुए भी मौन रही और कीम के साथ पता नही अपना क्या क्या बॉटती और लुटाती रही!
एक बेहद सुरक्षित नाव मै उसके जीवन के आसपास खेता रहा, फिर मैने अपनी नाव एक दूसरी दिशा मे मोड़ ली।उसे खोने और उसे न पाने का दुख मुझे आज तक है, पर अब कुछ पाने के लिए मै अपना कुछ भी खोने को तैयार न था।इतने बड़े देश मे मुझे अपनी मनोवांछित कोई न कोई कभीं न कभीं मिल ही जाएगी।समय की बात है और सब्र मुझमे है।मैने अपना मन नही हारा था।
नींद मुझसे कोसों दूर जा चुकी थी।मै बस करवट पर करवट बदले जा रहा था।
कैथरीना कुछ खींची खींची सी रहने लगी, पर सामने पड़ने पर नमस्ते बन्दगी कर लेती थी।बेमन दो चार औपचारिक बातें भी हमारे बीच हो जाती थी।
अचानक कैथरीना के पिता ने एक निजी मकान खरीदने का फैसला कर लिया और उन्हे एक दो कमरे का मकान क्लिनिकुम स्टेग्लीत्स के करीब ही अपेक्षाकृत कम कीमत पर मिल गया।जीवन भर किराया भरते भरते मिस्टर क्रेसर की नाको मे दम आ चुका था।वो रिटायर भी हो चले थे।कैथरीना फ्री

यूनिवर्सिटी मे कला का इतिहास पढ रही थी।जब तब वो कारस्टाट नाम के एक जेनरल स्टोर मे घन्टों के हिंसाब से काम कर लेती थी और अपना जेब खर्च निकाल लेती थी.पर उसके पास पैसे का कोई स्थाई स्रोत न था।लिहाजा उसे अपने माँ बाप के साथ नए मकान मे जाना पड़ा।न पूछे जाने पर भी मुझसे जितना हो सका.मैने इस परिवार के लिए किया।उनके सामान ढोया।मिस्टर क्रेस्मर के संग उनके पुराने मकान की वाईट वाशिंग की।जब वो पूरी तरह अपने मकान मे सेट हो गए तो एक दिन दूसरे मेहमानो के साथ मुझे भी शाम के खाने का न्योता मिला।
एक गुलदस्ता बँधवा कर.एक अच्छे वाईन को रैप करवा के मै भी समय से वहाँ जा पहुँचा।मेरे अलावे वहाँ तीन और परिवार आए हुए थे.जो मिस्टर क्रेस्मर के स्कूल के साथी थे।खाने पीने का भरपूर इन्तजाम था।इस शाम मै कैथरीना मे एक अजीब सा परिवर्त्तन देख रहा था।मेरे खाने पीने का जैसे सारा जिम्मा वो अपने सर पर ले रखी थी।उसका व्यवहार भी बेहद उन्मुक्त था।मै बैठा बस यही सोचे जा रहा था कि अचानक इस लड़की को क्या हो गया है!आए मेहमान शायद यही सोचे जा रहे थे कि मै उसका मंगेतर नही तो कम से कम जिग़ी दोस्त तो जरूर ही हूँ।मुझसे भी कई व्यक्तिगत सवाल किए गए.जिनके जबाब मुझे देने पड़ गएःमै कहाँ से हूँ.क्या पढा हूँ.कहाँ काम करता हूँ इत्यादि इत्यादियाँ।मुझे रह रह कर लगता था कि मेरा परिचय मेहमानो को गलत दिया गया है।मिसेस क्रेस्मर भी मेरी तारीफों के पुल बाँधे जा रही थी.जिसका औचित्य मेरी समझ के बाहर का था।कैथरीना की बड़ी बहन को अकस्मात मेरी हॉबियों मे रूचि थी।मिस्टर क्रेस्मर मुझे हिदायतों पर हिदायतें देते चले जा रहे थे।मै वाकई इस परिवार के रवैये पर दंग था।
ग्यारह बजे के आसपास दूसरे मेहमान चलने को हुए।मै भी चलना चाहा.पर मिसेस क्रेस्मर के अनुरोध पर मुझे रूकना पड़ गया।
ड्राईनगरूम के जूठे बर्त्तन हटाए जा चुके थे।मिसेस क्रेस्मर एक छोटे से ट्रे मे चार शीशे की छोटी पर ढंढी ग्लासें टेबल पर रख गई.फिर वो एक पुश्किन्सकाया वोदका का बोतल लिए आईःहमे आज का खाना भी तो पचाना है.कहके वो चारो ग्लास लबालब वोदके से भर गई।
ना ज्दारोविया कहके हम एक ही साँस मे अपनी ग्लासें खाली कर गए।
बातचीत शुरू तो हुई मेरे गाँव से.जो मेरे कॉलेज से होते हुए मास्को तक जा पहुँची जिसमे मिसेस क्रेस्मर की बड़ी दिलचस्पी थी।मै भी उनसे पूछना चाह रहा था कि मिस्टर क्रेस्मर से शादी करने के बाद उन्होने अपना सरनेम क्यों नही बदला.पर कुछ सोच कर मैने ऐसा न किया।उनका सरनेम इल्यानोवा था.पर मै उन्हे मिसेस क्रेस्मर ही कहके बुलाता था।
बातचीत बर्लिन तक जा पहुँची।मिस्टर क्रेस्मर भी सिविल सर्विस से ही रिटायर हुए थे।सिविल सर्विस के दोष और गुण गाते हम उन्टर डेन आईखन तक आए।उन्टर डेन आईखन बर्लिन के स्टेगलीत्स इलाके का एक काफी लम्बा और हरा भरा रास्ता है.जिससे लगा यहाँ का बोटेनिकल गार्डन भी है।इसी रास्ते पर चार मंजिलों की एक सौ सोलह इमारतें है.जिनमे सिर्फ सिविल सर्विस मे ही काम करने वाले रहते हैं।यहीं मेरे पास एक चार कमरे का मकान था।मै पहली मंजिल पर रहता था।
जब मिसेस क्रेस्मर अपने नए निजी घर को तीन व्यक्तिओं के लिए बेहद तंग बताने लगीं तभी मेरे मन मे एक अजीब सी शंका जगी।मुझे लगा कि अब मुझसे कुछ उल्टा सीधा पूछा जाएगा और यही हुआ भी।शुरू की तमाम बातें महज भूमिका थीं।मुझसे कैथरीना को अपने साथ रखने को कहा गया और इसकी एवज मे मुझे महीने का तीन सौ मार्क किराये का ऑफर भी मिला।मुझे उसके संग अपने दो कमरे बाँटने थे।एक बार तो मेरी बोलती ही बन्द हो गई।मुझे लगा कि क्रेस्मर परिवार को ये पता ही नही है कि वो मुझसे क्या चाह रहे हैं या उन्हे अपनी बेटी की बदनामी की कोई फिक्र ही नही है।ये ठीक है कि जर्मनी मे कौन क्या कर रहा है.किसके साथ रह रहा है.इन बातों मे कोई दखलअन्दाजी नही करता फिर भी अफवाहों से ये देश भी नही बचा है।यहाँ के लोग अपने व्यवहारों मे ही स्वछन्द हो पाए हैं.विचारों मे ये हमसे भी ज्यादे संकीर्ण हैं।दूसरी बात मै कैथरीना के लिए ऐसा कोई भी कदम उठाने को तैयार न था।मुझे अपनी बदनामी का डर था।मुझे लगता था कि वो तमाम लोग जो मुझे जानते हैं.उनकी मुझसे बेहद ऊँची अपेक्षाएँ हैं।पता नही ये लोगों की अपेक्षाएँ थी या मेरी अपनी.जो बाहर की दुनिया मे भी प्रतिबिम्बित और प्रतिध्वनित हो रही थीं।
मैने क्रेस्मर परिवार का प्रस्ताव ठुकरा दिया.जिसकी उन्हे अपने सपनो मे भी आशा न थी।एकबारगी सबकी बोलती बन्द थी।बड़े ही बोझिल वातावरण मे मैने इस परिवार से विदा ली।इनकी आँखों मे आया आक्रोश मै अच्छी तरह देख सकता था।बस स्टैंड तक छोड़ने कैथरीना आई।मेरा मन भी भारी तो हो गया था.पर किसी तरह मैने अपने को संतुलन मे ही रखा।
मुझे अच्छी तरह याद है कि कैथरीना से विदा लेने से पहले मैने उससे बस इतना ही कहा थाःहर चीज का टूटना कष्ट्रदायक होता है.विशेषकर आशाओं और अपेक्षाओं का टूटना।मैने बहुत सोच समझ कर तुम्हे अपने साथ रखने को मना किया।हमारे और तुम्हारे बीच के सम्बन्ध का एक प्रारम्भ सम्भव था.उस समय जब तुम क्रीम मे खोई हुई थी।मै स्वयम को बड़ी अच्छी तरह से जानता हूँ।मेरे घाव भर ही नही पाते।उन पर किसी दवा का असर नही होता।जिन्दगी भर रिसते रहते है।दूसरी बातःजब मै किसी सम्बन्ध को अलविदा कह देता हूँ.तब उस सम्बन्ध की तरफ दुबारा वापस नही लौटता।बिना पेंदीं के लोटे या फिर बाहर अरगनी पर पसारे कई ओवरकोट तुम्हे जर्मनी मे मिल जायेंगे।पूरब की हवा चलती है.तो उधर वो अपना कंधा कर देते हैं.पश्चिम की हवा चली.तो पश्चिम की तरफ।मै उनमे से नही हूँ।तीसरी बातःतुम्हारे माता पिता की ये बात मेरी समझ मे नही आई कि वो कैसे अपनी अविवाहित और लाड़ली बेटी को एक अविवाहित के घर पर रखना चाहते हैं।
कैथरीना से एक शब्द तक न बोला जा सका।मुझे उस पर दया तो बहुत आई.परन्तु मै स्वयम विदेश मे अकेला रह रहा था।मुझे अपने हर फैसले बड़ी फूँक फूँक कर लेने पड़ते थे।
सुबह हो चली थी।जब मै उठ कर खिड़की तक आया तो देखा आसपास का पूरा इलाका ही बर्फ से ढँका पड़ा है।चीड़ के तमाम पेंड़ बर्फ से लदे पड़े हैं।रात भर बर्फबारी होती रही और मुझे पता तक न चला।अच्छा हुआ कि मै खाने पीने का थोड़ा बहुत सामान खरीद लिया था।एक कप चाय बनाकर मै फिर बिस्तर मे ही घूस गया।
कैथरीना से मेरी मुलाक़ातें अक्सर स्लोशस्ट्रासे पर होती थी।कभीं कभीं वो घर के सामने भी टकरा जाती थी।हम एक दूसरे को कभीं अनदेखा न करते थे.पर हमारी बातचीत हाल चाल तक ही सीमित होती थी।मेरे मन मे तो उसके प्रति प्यार पनप रहा था।उसके मन मे क्या पनप रहा था.ये जानना तो जरा मुश्किल था.पर उसकी आँखों मे मेरे प्रति एक गौर तो तिर ही जाता था।
एक दिन वो मुझसे घर की सीढियों पर मिली और मुझसे पूछीःतुम इन्डिया के नार्दन पार्टस से हो न!
ःहाँ।
ःतुम्हारे शहर या गाँव का क्या नाम है!
ःवाराणसी.पर उसे बनारस ही कहा जाता है।कई लोग उसे काशी भी कहते हैं।
ःतुम अपने शहर के बारे मे कुछ बता पाओगे!
ःक्या जानना चाहती हो तुम बनारस के बारे मे!
ःसब कुछ।वहाँ का रहन सहन.रीत रिवाज.तीज त्यौहार सब कुछ।

ःअचानक तुम्हे बनारस के बारे मे सब कुछ जानने की क्यों सूझी!
ःइस सिमेस्टर मे मुझे एक रिपोर्ट जमा करनी है.किसी एक दूसरे देश के शहर के बारे मे।सोची कि तुम्हारे ही शहर के बारे मे क्यों नही!
ःरहन सहन.रीत रिवाजों के बारे मे मै तुम्हे घन्टों सब कुछ सुना सकता हूँ पर मै ऐसी रिपोर्टो के बारे मे जानता हूँ।तुम्हे उसमे बनारस की आबादी.वहॉ के मन्दिरों की संख्या.अलग अलग मतों को मानने वालों का प्रतिशत मे लेखा जोखा.उसकी ऊँचाई गहराई भी तो मिलीमीटरों मे लिखनी होगी।इनके लिए मुझे दो चार किताबें उलटनी पलटनी पड़ेगी।तुम मुझे थोड़ा समय दे पाओगी!
ःक्यों नही!अगले शनिवार को आऊँ!
ःठीक है।तुम शाम को ही आओगी ना!फिर साथ खाना भी खाएँगे।
ःइन्डियन खाने!
ःहॉ!क्यों नही!
ःबना लेते हो!
ःमै कोशिश करूँगा।तुम किस तरह की वाईने पीती हो!
ःतुम किस तरह की वाईन पीते हो।बताओ.मै लेती आऊँगी।कारस्टाट मे मुझे रिबेट मिल जाता है।
ःतुम्हे कुछ भी नही लाना है।तुम मेरी मेहमान हो।तुम सिर्फ मुझे ये बता दो कि तुम किस तरह की वाईन पीती हो!
ःमै ठीक चार बजे तुम्हारा कौलबेल दबाऊँगी.कहके वो अपने पर्श मे मकान की चाबी ढूँढने लग पड़ी।
ःउसे श्येनेन आबेन्ट कहके मै अपने मकान मे आ गया।
अपनी जीत पर मै फूला न समा रहा था।अपने ड्राईनगरूम मे आते ही मै ऊँचे स्वर मे गुनगुनाने लगाःमै आया रे तेरे लिए सारा जग छोड़ के।
दूसरे दिन काम के बाद मै इन्डियन एम्बेसी से न जाने कितने पम्फलेटस उठा लाया।पास ही एक फ्री यूनिवर्सिटी की इन्सटिच्यूट थी.जहॉ एक हिन्दी किताबों की लाईब्रेरी थी।वहॉ से भी बनारस से सम्बन्धित ढेर सारी किताबें उठा लाया।
अब काम के बाद मेरे पास बस दो व्यस्तताएँ थी.मकान की सफाई और बनारस.जिसके बारे मे मै खुद ही लिखे जा रहा था।कैथरीना मेरे दिल और दिमाग पर छा चुकी थी और छाती चली जा रही थी।मेरा पूरा सप्ताह एक अजीब सी असहजता मे गुजरा।बनारस के बारे मे मै जो कुछ भी जान पाया लिखा .लेकिन उसे छापा नही।कम्प्यूटर मे ही रहने दिया।
.शनिवार को सुबह ही सुबह मै रसोईघर मे जा पहुँचा और दोपहर तक करैला भिन्डी भूनता रहा।बड़ी अधीरता से मै शाम होने का इन्तजार करता रहा।समय काटने के लिए मै एक तश्वीर फ्रेम करने लगा।ये तश्वीर मुझे एम्बेसी के ही एक पम्फलेट मे दिखी थी।एक लाल रंग की बाछी अपनी गर्दन हल्के से मोड़े खड़ी है।उसके गले मे एक धान के बालियों की बनी माला है।उसके दोनो छोटे सिंघ सिन्दूर से रंगे हुए हैं।उसे एक सॉवली सी यही कोई पॉच छ वर्ष की बच्ची बड़े प्यार से सहला रही है।उसने पीले रंग का एक घाघरा और लाल रंग का ब्लाउज पहन रखा है।उसकी दोनो कलाईयों पर पीले रंग के कड़े हैं।उसके बाल बड़े करीने से सजे हुए है और उसके जूड़े मे एक पीले रंग का उड़हल का फूल गूँथा हुआ है।इस फोटो का भी मै निगेटिव बनवा कर उसे इन्लार्ज करवा लिया था।
इस फोटो को फ्रेम करके मैने अपने कम्पयूटर के पीछे की दीवार पर लटका दिया जो आज तक वहीं है।शायद ही ऐसा कोई दिन होगा जब मैने ये तश्वीर न देखी हो।उसे देखते ही न जाने क्यों मुझे बनारस की वो बस्तियॉ याद आने लगती है.जहॉ कोयरी बसते है।ये सब्जियॉ उगाते है और फिर उन्हे बाजारों मे बेच कर अपने परिवार का निर्वाह करते हैं।
इस तबके से मुझे सिर्फ एक घटना ने जोड़ा और आज तक जोड़े रखा हैःउन दिनो मै बनारस के उदय प्रताप कॉलेज से बी एस सी कर रहा था।एक दिन पैदल घूमता अर्दली बाजार.कचहरी से होता हुआ वरूणा पुल तक जा पहुँचा।सड़क के दोनो तरफ सैकड़ों की संख्या मे बूढे जवान.मर्द औरतें बोरों पर सब्जियों का ढेर लगाए सस्वर अपनी सब्जियॉ बेच रहे थे।एक जगह पुल की रेलिंग खाली थी।मै वहीं जाकर खड़ा हो गया।वरूणा नदी का पानी बेहद घट चला था पर उसके दोनो किनारों पर दूर दूर तक क्यारियों मे लगी तरह तरह की साग सब्जियॉ लहरा रही थी।मै आगे बढा।नदेसर से पहले सड़क के बॉई ओर तीस चालीस लोगों का मजमा लगा हुआ था।किसी एक बेटी की विदाई हो रही थी।मै भी भींड़ मे जा कर खड़ा हो गया।सडक के किनारे एक मामूली सी डोली रखी हुई थी।उस पर छपे या बने फूल पत्ते न जाने कब के घिस चले थे।उस पर अपना हॉथ रखे एक सस्ते से मुकुट मे एक दुल्हा खड़ा था।वो स्ट्रेचलान का एक बेलबाट और एक कमीज पहन रखा था.जिसकी बॉहे केहुनी तक चपोती हुई थी।उसके पैरो मे एक काले रंग का चप्पल था .जिस पर धूल की एक मोटी सी परत जमी हुई थी।पसीने मे वो नहाए हुए था।पता नही अपने बालो मे वो कौन सा तेल चपोते था.जो पसीने के साथ उसकी कनपटियों से चू रहा था।कमीज के ऊपर के दो तीन बटन खुले हुए थे.जहॉ से उसकी गन्दी और करीब करीब काली बनियाइन नजर आ रही थी।दॉई कलाई पर लाल रंग के न जाने कितने धागे बॅधे हुए थे!गले मे मनौती का काला धागा।गर्मी से उसके ऑखों का काजल तक पसीने के साथ चू रहा था।बड़ी हसरत से उसे कम उम्र की लड़कियॉ निहारे जा रही थींःकब वो दिन आएगा जब हमे भी अयोध्या के राम एक डोली लिए व्याहने आएँगें!माई मुझे ॲकवारी मे लेकर राग पा पाके रोएगी और मुझे दुलारेगी!फटे बॉस जैसी आवाज मे लाउड स्पीकर पर ये गाना बजेगा...सोनवा क पिंजरा मे बन्द भयलीं हाय राम चिरई क जियरा उदास।उसे लतारा दुतकारा न जाएगा.सिर्फ बचिया कहके पुचकारा जाएगा.कॉसे की थरिया मे लडू और खाजा खाने को मिलेगा और साथ मे ले जाने को भी।
सड़क के किनारे ही एक एक मटमैली साड़ी पहने एक मॉ अपनी बेटी से विदा ले रही थी।जमीन पर ऊँकड़ू बैठे वो अपनी बेटी को दबोचे आर्त्तनाद कर रही थी।बाराती और घराती तो दूर रहे.अगल बगल से गुजरने वालो तक का दिल पसीज जाता था।मुझे ऐसा लग रहा था जैसे बिना सुन्न किए उसके बदन का कोई हिस्सा काटा जा रहा हो।बनारस मे बेटियों की विदाईयॉ ऐसे भी बड़ी हृदयविदारक होती है लेकिन ऐसी हृदयविदारक विदाई मैने अपने जीवन मे दुबारा न देखी।
मै बनारस मे ही खोया हुआ था कि अनायास कौल बेल बजी।दरवाजे पर कैथरीना खड़ी थी.सफेद रंग का एक जोगिंग सूट और एक सफेद रंग का चप्पल पहने।उसके हॉथों मे एक गुलदस्ता था जिसमे तरह तरह के खिले डालियन के फूल थे।हैलो कहके उसने ये गुलदस्ता मुझे पकड़ा दिया।बिटे कहके मैने उसे अन्दर आने को कहा और इशारे से उसे ड्राईनगरूम का रास्ता दिखा कर मै एक फूलदान ढूँढने लगा।जब मै वापस ड्राईनगरूम मे आया तो देखा कि वो घूम घूम कर दीवारों पर लगी तसवीरें देख रही है।
ःये तसवीरें तुमने खींची हैं!
ःनही।मेरा एक जर्मन कलिग है।उसे फोटोग्राफी का शौक है।हर साल इन्डिया जाता है।ये तसवीरें उसी की खींची हुई हैं।तुम बैठो तो सही।तुम्हारे लिए कुछ पीने के लिए लाऊँ!

ऊँ ऊँ! कहके वो अपने कंधे से लटकते बैग से एक वाईन का बोतल मुझे पकड़ा कर उसे फ्रीज मे रखने को कहा।
हाल चाल के बाद मै उसे अपने बेड रूम मे ले आया और कम्पयूटर ऑन करके अपनी कुर्सी उसे दे दी और खुद एक कुर्सी लेकर उसके बगल मे बैठ गयाःतुम्हारी रिपोर्ट तो मैने खुद ही लिख दी है।तुम भी एक बार पढ लो.जहॉ गलतियॉ हो.उन्हे सुधार लो.फिर मै उसे छाप दूंगा।
बड़े कृतज्ञ भाव से वो मेरी ओर देख कर हल्के से मेरा हॉथ सहलाने लगी।वो रिपोर्ट पढने लगी और मै उसके बगल मे बैठा उसके कमर तक लहराते बाल देखता रहा.जिसे वे रह रह कर अपने कानो के ऊपर चढा देती थी।जब तब वो मेरी ओर भी देख कर मुस्करा देती थी।बड़ी वेगमयी भवें थीं उसकी।
रिपोर्ट उसे इतनी अच्छी लगी कि उसने एक बार उठ कर मुझे मजवूती से भींच भी लिया।
इस मुलाकात के बाद वो मिलने पर मुझसे हॉथ नही मिलाती थी.बल्कि गले से लग कर मिलती थी।कई दिनो तक मेरे दिमाग मे उसके स्पर्श की मादकता छाई रहती थी।उसके दिल की धड़कने याद करते ही दूनी रफ्तार से मेरा अपना दिल धड़कने लगता था।
इसी शाम को मुझे उसकी बड़ी बहन के बारे मे भी पता लगा।कैथरीना की बड़ी बहन का नाम क्रिस्टिना था.जो एक स्कूल मे टीचर थी और अलग एक दूसरे मकान मे रहती थी।उसने दुनिया जहान की बातें मुझे बता डालीं.पर कीम का नाम तक न लिया.जिसे वो अपना दिल दिए बैठी थी।
इस शाम तक कीम के अस्तित्व के एक अल्पांश का भी मुझे आभास न था।मैने भी सपने बुनने शुरू कर दिए थे।मै भी अक्सर उसे और उसके माता पिता को खानें पर बुलाने लगा।मै सिर्फ खाना बना भर देता था।टेवल सजाना.खाना परोसना.खाने के बाद बर्त्तन हटाना.उन्हे साफ करके सुखाना कैथरीना की हॉथों मे ही होता था।वो मेरी एक न सुनती थी।
जब तब वो मुझे काम के बाद अपने पिता की गाड़ी से स्लाख्टेन जे भी ले जाने लगी।उसे पता था कि मुझे समुन्दरों का विस्तार बहुत अच्छा लगता है।एक अदभूत स्निग्घतता उसके सामीप्य मे थी।
इससे पहले कि मै उस पर अपने प्यार का इजहार करता या उसका हॉथ उसके मॉ बाप से मॉगता.अचानक वो मुझे कीम के साथ दिखी.हॉथ मे हॉथ डाले।रह रह कर हर दो कदम पर हल्के से कीम उसे चूम लेता था।मुझ पर तो एक बज्र ही आ गिरा।मै शहर से वापस घर आ गया।मेरा मन ग्लानियों से भर आया।पर तमाम कड़वाहटों के बावजूद मै किसी तरह का अपशब्द कैथरीना के बारे मे न कह पाया और न सोच पाया।कई दिनो तक मै बेहद उदास रहा फिर भी जब भी कैथरीना मुझे दिखी.मैने अपने मन के भाव उस पर जाहिर न किए और न ही कभी उसका कोई निमंत्रण ही टाला।अक्सर मै मन ही मन दुहराया करता थाःवक्त अभी भी है।वापस लौट आओ।मै ये भूल जाऊँगा कि कभी तुम्हारे जीवन मे कीम भी आया था।पर ऐसा कोई अजूबा न घटा और समय के साथ अब वो वक्त मेरे पास न रहा और इस तरह से मुँह मोड़ कर गए वक्त को फिर से वापस बुलाने का सामर्थ्य मुझमे न था।
वो अपना सारा अर्थ खोती चली गई।मेरी तरफ से ये सम्बन्ध लगभग मृत और औपचारिक हो चला था।
कैथरीना को मै खो चुका था या वो मुझे खो चुकी थी।अब न मेरे मन मे कोई भँवर था और न कोई उत्पाती तूफान।
मेरा मन एक बज्र की तरह कड़ा हो चला था।
कमरे से बाहर जाने की मेरी हिम्मत ही न हुई।जब तब खिड़की पर आ कर खड़ा हो जाता था।दूर दूर तक बर्फ फैला हुआ था।रह रह कर ऑधियॉ चलती थीं।चीड़ के पेंड़ो पर के बर्फ तो कब के झड़ चले थे.अब वो ऑधियों के थपेड़े खा रहे थे।कभीं कभीं तो ये ऑधियॉ उन्हे जमीन तक लिटा देती थीं।
मै अच्छी तरह जानता थाःएकाकीपन सिर्फ एक मन से बॉटा जा सकता है.किसी तन से नही।तन सिर्फ एक एकाकीपन को कुछ पल के लिए शान्त कर सकता है फिर वो बस उसे भड़काता है और भड़काता चला जाता हैःमै बार बार इसे दुहराता चला जा रहा था।एक त्रिकोण के अन्दर एक छोटी सी गोली की तरह लुढकता डगरता मै उसके एक बिन्दू से टकरा कर दूसरे बिन्दू की तरफ वापस लौट कर तीसरी बिन्दू से जा टकराता था।मेरे अकेलेपन को बाहर का मौसम या एक तरह से पूरा परिवेश ही घना किए जा रहा था.पर मै अपनी जिद़ को जानता था और कैथरीना के समीप जाने के परिणामो को भी।कई बार तो मन हुआ कि मै अपना कमरा ही छोड़ दूँ।कहीं चला जाऊँ.जो मै न कर सका।
ठीक छ बजे शाम को मेरे कमरे के दरवाजे पर दस्तक पड़ी।मै अपना मन मजबूत करके दरवाजे की ओर बढा.उसी कम्बल को ओढे.जो मै दिन भर से ओढे हुए था।दरवाजे पर बड़े ही सभ्रान्त कपड़ो मे कैथरीना खड़ी थीःएक पल तो मै उसे देखता ही रह गया.किसी एक भूखे भेंड़िये की तरह।मेरी अपनी जिद़ पता नही कहॉ काफूर हो गई थी!बड़ी मुश्किल से मैने अपने आप को सम्हाला।दूसरे शब्दो मेःमेरी आहत भावनाओं ने मुझे सम्हाला।
कैथरीना ने अपनी लम्बी बॉहें फैला दी।पता नही वो कौन सा परफ्यूम लगा रखी थी.जिसकी खूशबू कुछ पल तक मेरे होशोहवाश से खेलती रही।मुझे लग रहा था जैसे वो एक पूरी तैयारी और एक मौन निमंत्रण के साथ मेरे पास आई है.जिसे टालना मेरे लिए उतना आसान न होगा।मन निराश हो कर विरक्त हो जाता है पर लालची तन का विरक्ति से कुछ खास लेना देना नही होता है।
दो कप चाय बना कर एक प्याला मैने उसकी हॉथों मे पकड़ाते हुए उसे बैठने को कहा।वो मुझे निर्निमेष देखे जा रही थी।मेरा विरक्त मन भी डूबने को आया।मुझसे उसकी ओर देखा न जा रहा था।मेरी समझ मे नही आ रहा था कि कैसे मै इस मेनका का ध्यान बदलूँ!
ःतुम अपनी दादी के संग कब से रह रही हो!बर्लिन क्यों छोड़ा!पढाई लिखाई का क्या हाल है!क्रेस्मर्स कैसे हैं!क्रिस्टिना कैसी है!
सवालों की मैने झड़ी सी लगा दी।मुझसे अपनी आवाज का भर्राना छुपा न था।
वो चुपचाप बैठी बस मुझे देखे जा रही थी।
ःचाय तो पीओ।ठंढी हो रही है।
चाय की एक घूँट ले कर उसने प्याला बगल की एक तिपाई पर रखते हुए हुए कहा
ःतुमसे एक बात पूछनी थी।पूछूँ!
ःक्यों नही।क्या पूछना चाहती हो!अपना मन मजबूत करते हुए मैने कहा
ःतुम मुझसे नफरत तो नही करते!
ःबिल्कुल नही
ःकभीं कभार तुम्हे मेरी याद भी आती है!
ःअक्सर।
ःक्या याद करते हो मेरे बारे में!
ःज्यादेतर मुझे तुम्हारे कीम से मिलने का अफसोस होता है।मुझे इस बात का भी अफसोस होता है कि तुमने सब कुछ जानते हुए भी कीम के लिए फैसला लिया और मेरा दिल दुखाया।मुझे इस बात का भी दुख है कि चाहते हुए भी मै तुम्हे अपने साथ न रख सका।मुझे तुम्हारे अध्याय को हमेशा के लिए बन्द करना पड़ा.मुझे इस बात का भी दुख है।

ःकितनी बार तुम मुझे स्लाखटेन ज़े लिवा गई थीं!
ःयाद तो नही.शायद दस बार
ःये शामे अक्सर मेरी ऑखों के सामने तिर जाती हैं.फिर मुझे तुम्हारी छोटी से छोटी बातें भी याद आने लगती हैं।
अचानक मेरा मन भारी होने को आया।
कैथरीना भी कुछ अस्थिर सी हो उठी।वो उठ कर मेरे बिस्तर तक आई और मेरा कम्बल जरा परे करके वहीं बैठ गई
ःतीन महीने के अन्दर मुझे रूमेनिया जाना है।पता नही अब तुमसे कब मुलाक़ात होगी!मै तुमसे कुछ भी न मॉगूगी।अगर तुम मुझसे कुछ चाहते हो.तो मै तुम्हे ना नहीं बोलूँगी।
ये एक खुला आमंत्रण था।
मेरे दिमाग का एक एक नस झनझना उठा।बिना खोए कुछ पाने का ये मौका मेरे जीवन का पहला मौका था.पर मै अच्छी तरह जानता था कि यहीं से एक ऐसे सम्बन्ध की शुरूआत सम्भव है.जिसमे सिर्फ यंत्रणायें ही होंगी।एक बीमार सम्बन्ध न तो मुझे चाहिये था और न उसे ही।बड़ी दृढता से मै ना के स्वर मे अपना सर हिलाया
कैथ!तुम बेहद सुन्दर हो.पर तुम मुझे किसी उबड़ खाबड़ रास्तों पर न खींचो।मै एक बॅटे तन के साथ जी सकता हूँ.पर एक बॅटे मन के साथ नही।एक बॅटा तन पूर्ण किया जा सकता है.पर एक बॅटा मन आजीवन बॅटा और अपूर्ण बना रहता है।अतीत की कुछेक यादों से लिपटा रहता है।
उसके विस्फारित ऑखों मे अचानक खींच आए पराजय के भावों को मै अच्छी तरह पढ सकता था।
ःतुमने मुझे कभीं न बताया कि तुम मुझे चाहते हो!
ःबहुत सारी बातें बताई नही जाती।फिर तुम्हे बताता भी कब!फिर बताने का फायदा भी क्या होता!तुम कीम मे खोई हुई थी.उसकी गाड़ियों मे खोई हुई थी।मेरी संवेदनशीलता को मेरा भगवान भी आहत करने से घबराता है.जिसे तुमने आहत किया।कहॉ था तुम्हारा नारी मन उन दिनो!
उससे एक शब्द तक न कहा जा सका।एक लम्बे मौन के बाद उसने अपनी पलकें उठाई.जिसमे उदासी ही उदासी दिख रही थी।परन्तु अब मुझे इस मेनका का कुछ भी आलोड़ित न करता था।
समय के साथ कैथरीना का ये निमंत्रण तो धूॅधला पड़ता चला गया.पर इस शाम की कई बातें मै आज तक भूल नही पाया।पता नही उसे किस बात की सजा मिली!कौन सा अपराध उससे हो गया था!
ये सब उसी के कहे शब्द हैंःजिस शाम को तुम्हे मुझे अपने साथ रखने को कहा गया था.वहॉ मेरी भी मंजूरी थी।बेशरमी की भी एक हद होती है।तुम्हे संक्षेप मे ही मै सब कुछ बता देती हूँ।कीम मुझे छोड़ दिया था.पर मै अभी भी उसे चाहती थी।कई बार वो मुझे अपनी दूसरी तीसरी सहेलियों के साथ दिखा।ईर्ष्या से मेरा तन मन जल जाता था।मेरे मन मे अभीं भी एक आस थी कि एक न एक दिन कीम को मेरे पास लौटना ही है।
एक दिन वाकई मे मुझे अपने हैन्डी पर उसका एक एस एम एस मिला।वो मुझसे मिलना चाहता था।बिना सोचे समझे मैने उसे हॉ कह दिया।उसका एक दोस्त शारलोटेनबुर्ग मे एक चायनिज इम्बिस मे रसोईया था।मै इस इम्बिस मे कीम के साथ कई दफे जा चुकी थी।इसी इम्बिस मे मुझे उससे मिलना था और वो भी शाम के आठ बजे।मेरी खुशी की कोई सीमा न थी।मुझे उन हर लड़कियों के गाल पर तमाचे मारने थे.जिन्होने कीम को मुझसे छीन रखा था।
मै कीम से मिलने गई।रात के एक बजने को आए और कीम अब तक मुझसे अपने किये की माफी मॉगे जा रहा था।गोकि मैने उसे उसके एस एम एस पाने के बाद ही माफ कर दिया था।इम्बिस के बन्द होने का समय आया।इम्बिस का शटर गिरा दिया गया था।इस इम्बिस के राशन वाले कमरे मे ही कीम का दोस्त रहता था।इम्बिस के बन्द होने के बाद उसका दोस्त दूसरे कामों मे व्यस्त था.और कीम मुझसे इस कमरे मे चलने की जिद़ पकड़े बैठा था।मै अभी इस कमरे के दरवाजे तक पहुॅची भी न थी कि अकस्मात वो मुझे अन्दर धकेल कर अपने पीछे दरवाजा बन्द कर लिया।वो बिल्कुल नशे मे था।मै भी हल्के नशे मे थी।इसके पहले कि मै सम्हलती.मै उसकी मजबूत पकड़ मे थी।एक वहशी जानवर की तरह वो मुझे नोचे और खसोटे जा रहा था।तभी उसका दोस्त एक खुले कौन्याक की भरी बोतल लिए कमरे मे आया और आते ही जबर्दस्ती मेरा मुॅह खोल कर बोतल मेरी मुॅह मे घूसेड़ दिया।मुझसे सॉस तक नही लिया जा रहा था।घबराहट मे न जाने मुझे इस कौन्याक की कितनी घूॅटें पीनी पड़ गई।
सुबह दस बजे मेरी ऑखे खुली।मै एक गन्दे सोफे पर कीम के दोस्त के साथ लेटी पड़ी थी.जिस पर न जाने कितने मोटे मोटे तिलचट्टे घूम रहे थे।कीम जा चुका था।मैने अपने कपड़े समेटे।एक टेक्सी लेकर घर वापस आई।मेरे माता पिता पूरी रात सो नही पाए।मेरे पिता तो कब का पुलिस को फोन कर दिये होते.अगर मॉ ने उन्हे न रोका होता।मुझे अपने जीवन मे उनका पहला तमाचा मिलने वाला था.पर मेरी हालत देख कर वो सकते मे आ गए।क्रिस्टिना मेरा हॉथ थामे ड्राईन्गरूम मे लिवा गई और बड़े प्यार से मेरा सर अपने सीने से लगा लिया।उसके इशारे पर मॉ मेरा बिस्तर जमीन पर लगाने लगी।अपना सहारा देकर क्रिस्टिना मुझे बिस्तर तक ले गई और सहारे से मुझे बिस्तर पर लिटा कर खुद भी मेरे साथ लेट गई।उसके बॉहों मे मै सो गई।जब मेरी पहली बार ऑखे खुली.तब दिन के ग्यारह बज रहे थे।
मेरे साथ कुछ अप्रिय घटा है.इसका सभी को अंदेशा तो था.पर सभी चुप्पी साधे मेरे कुछ कहने का इन्तजार कर रहे थे।
जब मै शावर के नीचे खड़ी नहा रही थी.तभी अचानक मुझे तुम्हारा ये कहा याद आयाःहमे एक दूसरे से हमारी ऑखें ही मिलवाती हैं कैथ!हम तब तक एक दूसरे के लिए अन्जान होते हैं.जब तक हमारी ऑखे एक दूसरे के लिए अन्जान होती हैं।बड़ा मुश्किल था कीम की अधखुली ऑखों मे झॉकना।
बिना मॉगे और बिना उसकी ऑखों मे झॉके मैने कीम को अपना सबकुछ सौंपा और तुम्हे मैने कुछ भी न दिया।तुम मेरा विश्वास करो.मै बाथरूम मे तुम्हारे लिए घंटो रोई।तुम जैसे इन्सान को अपना दिल न देकर मैने एक वहशी को अपना दिल सौंपा।एक बार स्लाख्टेन जे के तट पर मैने ऐसे ही मजाक मे तुमसे पूछा थाःप्रमोद जिस रफ्तार से तुम सायकल चलाते हो.उससे तो तेज मै पैदल चलती हूँ।मुझे तम्हारा जवाब आज तक याद हैःकैथ!मुझे सड़क पर रेंगती चिटियों के सामने भी सायकल के ब्रेक दबाने पड़ जाते हैं।ये तुम्हारे मन का कोमलपन था।तुम्हारा ये कहा मै आज तक नही भूल पाई।
मुझे कीम से गर्भ ठहर गया था.जिसे मेरे मॉ बाप तुम पर थोंपना चाहते थे।मैने उनकी कानाफूसी एक बार सुनी थी।जब उन्हे मेरे गर्भ का पता चला.तब घर पर बड़ा कोहराम मचा।मुझे ये भी पता न था कि ये गर्भ मुझे कीम से है या उसके दोस्त से है!हर तरफ से मुझ पर दबाव डाला गया कि मै ये गर्भ गिरवा दूॅ.जिसके लिए मै बिल्कुल तैयार न थी।जब मै अपने फैसले से टस से मस नही हुई तो मेरे माता पिता मेरे भले के लिए एक उपाय ढूॅढने मे लग गए।तुम उन्हे हर तरह से बड़े उचित लगेःलड़का संवेदनशील है.सिविल सर्विस मे है.अपना चार कमरे का मकान है और देखने मे भी बुरा नही है.ये मेरे मॉ की राय थी।उन्हे ये भी पता था कि तुम मुझे चाहते हो।
उनकी पहली समस्या ये थी कि मै अविवाहित होते हुए भी एक बलात्कार के बच्चे को जनना चाहती हूँ।मेरे पास तो एक सगा दोस्त तक न था।दूसरी समस्या एक मकान की थी.जो मेरे पास न थी और न मै किसी मकान का किराया ही भर सकती थी।ऊपर से एक बच्चे का भी सरदर्द.जो मेरे मॉ बाप के लिए कुछ जरूरत से ज्यादे ही था।वो मुझे स्वावलंबी बनाने की फिक्र मे थे और मै उन्हे पंगु ही बना के रख दी थी।पता नही क्यों क्रिस्टिना भी मुझसे रूठ

गई थी।सीधे मुँह वो मुझसे बात ही न करती थी।बड़े अनमने ढंग से मेरा विस्तर ड्राईन्ग रूम मे लगा दिया जाता था।अव मै अपने मॉ बाप की लाड़ली न थी।मै उन्हे उनकी बेटी होने के नाते सजा दे रही थी।
अव इस त्रासदी को तुम्हे ही खत्म करना था और तुम दो टूक जबाव दे कर चले गए।यहॉ तक कि हमसे अपना नाता ही तोड़ बैठे।शायद तुम्हे मुझ पर दया आ जाती.अगर तुम्हे सारी परिस्थितियॉ खोल कर बताई जातीं।शायद!!
ःशायद नही कैथ।मै तुम्हे शत प्रतिशत अपना लिया होता।तुम्हे सीधे मेरे पास आना था।मै तुम्हे ना नही करता।मै आजीवन तुम्हे अपना संरक्षण देता।अपने आप से कई समझौते भी कर लिया होता।ज्यादे से ज्यादे क्या होता!प्रमोद के हॉथों प्रमोद की हत्या।सिर्फ इतना ही.जिसका मै तुम्हे कभीं कोई भान नही होने देता।हर जीत मे एक हार है और हर हार मे एक जीत होती है।तुम्हे सीधे मेरे पास आना था।
ःथोड़ी वहुत मै भी तुमसे नाराज रही.जिसकी मेरे पास कोई वजह न थी।
ःसमय के साथ मै एक बच्ची को जनी.पर उसे मैने कीम का सोचा हुआ नाम न दिया।मैने उसका नाम मार्था रखाःमार्था क्रेस्मर।मैने कहीं भी मार्था के बाप कीम या उसके दोस्त का जिक्र न किया।कानूनन अगर मै चाहती तो उन्हे मै हर दलदल मे घसीट सकती थी.जो मै नही चाहती थी।जब मेरी बच्ची के किस्मत मे बाप ही नही लिखा था तो उनके दो चार मार्क भी मुझे नही चाहिये थे।इन दो चार मार्को के लिए यहॉ की अदालतों मे जो कालिख मेरे चेहरे पर पोती जाती.इसकी कल्पना तो तुम भी कर सकते हो।
मैने एक नई हिम्मत अपने मे सॅजोई और मार्था को गले से लगा लिया।अव मुझे किसी बात की फिक्र न थी.कौन मार्था के आने से खुश है और कौन नाराज है।मै उसकी मॉ हूँ और वो मेरी बेटी.तीसरी चौथी बातों की मुझे कोई परवाह ही न थी।मैने कीम को भी माफ कर दिया।
अव मार्था ही मेरी दुनिया थी।मै उसी की होकर रह गई थी।
पर पता नहीं क्यों मार्था चौबीस घन्टे रोती ही रहती थी।मेरी नींद को तो गोली मारो.उसने तो मेरे मॉ बाप की ही नही बल्कि आस पड़ोस तक का नींद हराम कर रखी थी।आए दिन ही मै डाक्टर बदलती रही।शायद ही ऐसा कोई दिन रहा हो.जो बगैर किसी डाक्टर के पास गए गुजरा हो।
अगर बच्चे का पेट भरा हो और वो फिर भी विलविलाता है.तो इसका सीधा मतलब ये है कि उसे कोई तकलीफ है.पर मेरी बातों पर कोई कान ही न धरता था।जितने डाक्टर.उतनी रायें।दुःख मुझे सिर्फ एक बात का है कि मेरे सगे तक ये न जान पाए कि मार्था को कोई तकलीफ है।
मार्था का जन्मदिन मै बस दो ही बार मना पाई।एक दिन वो खड़ी ही खड़ी गिर पड़ी और अचेत हो गई।मै उसे लेकर तुम्हारे ही हॉस्पीटल मे भागी।यही कोई दिन के तीन बज रहे थे।उसका हर तरह से चेक अप किया गया।करीव सात बजे मुझे बताया गया कि उसे ब्रेन टयूमर है.जो काफी बड़ा हो चला है और किसी भी वक्त फट सकता है।तुम्हारे केर्न स्पीनटोमोग्राफी डिपार्टमेन्ट मे एक डाक्टरों का ग्रुप मार्था के आपरेशन का प्लान चाक आऊट करने मे लग गया।ऑपरेशन की पूरी तैयारी हो चली थी।यहॉ तक कि इसी डिपार्टमेन्ट मे एनेसथिजिस्टस भी आकर उसे बेहोशी की दवा देकर उसका वेड ऑपरेशन हॉल की ओर लेकर दौड़ पड़े।मै भी मार्था का वेड थामे उनके साथ दौड़ पड़ी और मेरे पीछे क्रिस्टिना और उसके पीछे मेरे मॉ बाप।पता नहीं कितने यन्त्रो से मेरी बच्ची को जोड़ा गया था!न जाने कितनी सूईयॉ उसके वदन मे चूभोई गई थीं।लिफ्ट मे हम सभी को आने से मना किया गया.पर मै न मानी।मै मार्था को अकेली नही छोड़ सकती थी।हजारों लाखों बार मैने अपने ईश्वर से भीख मॉगीःमेरा सब कुछ ले लो.बस मेरी मार्था को जीवन मे रखना।मुझे तुम्हे जिस बात की भी सजा देनी है दो.पर इस नन्ही सी बच्ची के साथ कोई अन्याय न करना।पर जितनी अशक्त मेरी प्रार्थना थी.उतना ही अशक्त मेरा ई श्वर था।हम पॉचवीं मंज़िल तक ही पहुँचे थे कि मार्था की बन्द ऑखें कभी न खुलने के लिए बन्द हो गई।देर इतनी हो गई थी कि उससे सातवीं मंजिल तक न तय की जा सकी।
मैने अपने मॉ बाप और बड़ी वहन को आज तक माफ नही किया।उन्होने मेरी बच्ची की अवहेलना की और यहॉ तक कि उसके गुजरने के वाद जैसे उन्होने राहत की सॉस ली।
क्या बिगाड़ा था मार्था ने उनका!उसकी उन्होने क्यों उपेक्षा की!
मै स्तब्ध कैथरीना को सुनता रहा।सिर्फ एक बार मै अपने ऑसू पोछने बालकोनी मे गया।
ःमै बर्लिन छोड़ कर हार्त्स आ गई और अपनी दादी के साथ रहने लगी।मन ही मन मैने एक फैसला कर लिया था कि अव मुझे इस देश मे रहना ही नही है।थोड़ा वक्त तो लगा.मुझे अपने को समेटने मे।इस दौरान तुम मुझे बहुत याद आए।खैर.मैने ग्योटिंगन मे अपनी पढाई शुरू की।मुझे एक चार घन्टे की एक नौकरी भी मिल गई।अब मेरे पास एक डिप्लोम है और रूमेनिया मे एक नौकरी का ऑफर भी।दो वर्ष का कान्ट्रेक्ट है.जिसका शायद एक्सटेंशन होता रहेगा।वरना कहीं और चली जाऊँगी।
ःकव जाना है तुम्हे वहॉ!
ःतीन महीने के अन्दर
ःकाम किस तरह का है!
ःएक पुरानी सी म्यूजियम है.जिनमे रखी चीजों की मुझे उम्र तय करनी है।
एक अजीव सी मनःस्थिति मेरी हो चली थी।कैथरीना को एक सहारा नही.सच्चा प्यार चाहिये था.जिसका एक छोटा सा कण भी मै अपने मे न ढूँढ पा रहा था।मेरे और उसके वीच उदासीनता और परायेपन का एक अनन्त बंजर जमीन फैला हुआ था।वो भी किसी आशा के साथ मेरे पास नही आई थी.वरना मै एक ऊहापोह से उलझ सकता था।
कैथरीना चुपचाप उठीःहार्त्स मे और कितने दिन रहना है!
ःरविवार तक।सोमवार को काम पर जाना है।
ःयहॉ कुछ देखे वेखे भी या दिन भर कमरे मे ही पड़े रहे!
ःऐसे मौसम मे कौन बाहर निकलता है!
ःअच्छा अव मै चलूँगी।कल अगर मौसम ठीक ठाक रहा तो मै तुम्हे यहॉ का स्टाईन किर्से और विस्मार्क टुर्म दिखाने ले चलूँगी।
ःरहने दो कैथ.फिर कभीं देख लूँगा।मै सोच रहा हूँ कि कल ही सुबह की बस लेकर बर्लिन वापस लौट जाऊँ।अब मै यहॉ ज्यादे लम्बा नही रह पाऊँगा।तुमसे बस इतना ही कहना चाहता हूँ कि मुझे मार्था के गुजर जाने का बेहद अफसोस है।एक अफसोस मुझे इस वात का भी है कि मै तुम्हे किसी तरह का संबल न दे पाया।तुमसे मैने एक बार पहले भी कहा था और आज भी कह रहा हूँ कि एक अडिग दोस्त की तरह मै आजीवन तुम्हारे साथ हूँ।पर जो चीज मेरे पास नही है.वो मै तुम्हे न दे सकता हूँ और न देने का आश्वासन कर सकता हूँ।इसे तुम अपना अपमान न समझना।एक उदासीन प्यार की कम से कम तुम्हे कोई जरूरत न थी और न है।उससे मै तुम्हारा कोई भी घाव नही भर पाऊँगा।तुम मुझे बेहद उदास करके जा रही हो।
कैथरीना मुझे गले से लगाकर ढेर सारी कामनाऐं देकर चली गई।

आज के दिन मे संतोष मुझे सिर्फ एक बात का हैःपहली बार मैने अपने जीवन मे किसी अप्सरा के लिए न कोई झूठ बोला और न अपनी भावनाओं पर कोई गलत रंग फेरा। दो चार विताई रातों की रंगीनियत शाश्वत हो ही नही सकतीं। अपनी इस उम्र मे मै सौन्दर्य सिर्फ शाश्वतता मे ही ढूंढ रहा था। अपने रूप और काया पर दम्भ भरने वाली अप्सराओं को मेरी संस्कृति मे हमेशा ही सजा मिलती आई है, जो उन्हे दूसरी संस्कृतियों मे भी मिलनी चाहिये।

एक बात औरः

मई दो हजार आठ मे जागरण सखी मे विना मेरी अनुमति के प्रकाशित और पूछे जाने पर एक ऐसा बेशरम स्पष्टीकरण, जो न सिर्फ हास्यास्पद है, बल्कि दुखद भी। जिसकी लाठी उसकी भैंस वाली कहावत को चरितार्थ करने वाली अपने देश की एक पत्रिका, जिसका पाठक जगत मे श्रद्धा के साथ गुणगान किया जाता है। मै अपने सारे पत्राचार और इनसे मिले उत्तर का अविकल अनुवाद अपने इसी वेब मे कभीं अवश्य लिखूँगा। मेरी कहानी **उरसला** की भी कहानी कुछ इसी तरह की है। मै उसका भी उल्लेख करूँगा। अब तक बर्लिन मे मुझे सिर्फ एक ही पत्रिका अपने देश मे मिल पाई है, जिसके पास अपना एक चरित्र है। **सरिता**ःइस पत्रिका को मेरा नमन तो है ही, इसे मै अपनी शुभकामनायें भी भेजता हूँ।

सविनय
प्रमोद कुमार सिंह